

19 जुलाई, 88

आदरणीय रज़ा जी,

आपका पत्र मिला. बहुत दिनों से लिखने की सीच रहा था किंतु लिखना टलता ही रहा. बारिश यहां भी आजकल लगातार हो रही है. बंबई उसकी वजह से अट्यवस्थित होती है तो कभी जीवन पहले की तरह चलको लर्फाता है. फिर भी बंबई एक ऐसी नगरी है कि तमाम तरह की गतिविधियां जारी हैं. नये तमारोह, नई प्रदर्शनियां, और भी नयी चहल-पहल.

जानकर प्रसन्नता हुई कि आप अगले वर्ष जानिन के साथ ही भारत आने की योजना बना रहे हैं. उनसे बहुत संक्षिप्त मुलाकात हुई थी. इस बार कुछ अधिक समय हम लोगों के लिए रखिएगा.

पीटर बेक और ग़ीमो भारत लौट आये हैं. पीटर ते इधर 2-3 बार मुलाकात हुई है. उन्होंने बताया कि वे पेरिस से लौटते समय आपसे मिले थे. संभवतः ग्रीमो भी मिले होंगे. फ़ांसीसी क्रांति की दिशस्तवार्धिकी का आयोजन जोरशोर से हो रहा होगा. यहां भी तैयारियां गुरू हो गयी हैं. 21 तारीख को विधिवत घोषणा होने जा रही है. बंबई में फ़ांसुआ जे बिया आटरिंसी स्वयं घोषणा करेंगे. उनसे मुलाकात होगी, ऐसी संभावना है. निकोलाय पेरिस वापस चले गये हैं. उन्हें बहुत उत्तरदायित्वपूर्ण काम गृह मंत्रालय में दिया गया है. जब आप पेरिस पहुँचें तो उनसे अवश्य मिल लीजिएगा. सुजाता की तैयारी पूरी हो चुकी है. उसे फ्रांसीसी वजीफा भी मिल गया है. शायद 20 अगस्त को वह जानेवाली है.

देखिए कब मुलाकात होती है ? जनवरी में तो आप आ ही रहे हैं. बीच में यदि कोई और अवसर हुआ तो उसे मुनाने की को प्रिन्न करूंगा. गोर बियो का पता मेरे पास है. जैसा होगा खबर दूंगा. इस बार किस प्रकार का लेख तैयार करना है, यह सोच लेंगे.

शेष शुभ. आशा है सानंद होंगे.

этчот,

श्री एस. एव. रज़ा फ़ांस.